International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-12-2022, Accepted: 05-01-2023, Published: 21-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 15-16

भूमंडलीकरण के परिपेक्ष्य में बदलते सामाजिक संबध और मानवीय मूल्य– विशेष संदर्भ समकालीन कहानी

संदीप कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रसतुत शोध पत्र में भूमंडलीकरण के भारत में आगमन एवं तत्कालीन साहित्य में उसके परिवेश के माध्यम से हिंदी कहानी पर पड़ने वाले प्रभाव को अंकित करने का प्रयास किया गया है उदय प्रकाश ज्ञानरंजन जयनंदन अखिलेश आदि कथाकारों की कहानियों से भूमंडलीकरण के भारत में पड़ने वाले प्रभाव को समझा जा सकता है किसी भी रचनाकार की रचना जब अपने समय के परिवेश के साथ तादात्म स्थापित कर लेती है तब वह रचना और भी सशक्त प्रभावी बन जाती है प्रस्तुत शोध पत्र में भूमंडलीकरण और हिंदी कहानी के माध्यम से तत्कालीन परिवेश को जानने का प्रयास किया जाएगा

मूल शब्दः भूमंडलीकरण, सामाजिक संबध, समकालीन

भूमंडलीकरण जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है भू यानि पृथ्वी मंडल यानि समूह करण अर्थात एकीकरण करना इस प्रकार भूमंडलीकरण शब्द को समझा जा सकता है भूमंडलीकरण अंग्रेजी के ग्लोबलाइजेशन का हिंदी रूपांतरण है कहा जाता है कि भूमंडलीकरण की संकल्पना अमेरिका ने दिया और अमेरिका कि यह शुरुआत 1990 में धीरे–धीरे भारत में प्रवेश करने लगी नवंबर 1989 से सन 1991 तक राजनीतिक माहौल इतना अस्थिर रहा कि उसमें किसी आर्थिक विकास की संभावना ही नहीं थी नरसिम्हा राव के प्रधानमंत्री काल में 1 अप्रैल 1992 को आठवीं पंचवर्षीय योजना का आरंभ हुआ जो 1997 तक चली इस अवधि में वित्त मंत्री मनमोहन सिंह द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति लागू करने के बाद भारत आर्थिक संकट में मुक्त हुआ और आर्थिक उदारवाद की नीति के दृढ़तापूर्वक पालन का देश की अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पडा आर्थिक उदारीकरण के साथ ही उत्तर आधुनिकता और भूमंडलीकरण का दर्शन भारत पंहुचा ।
भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में एक देश दूसरे देश पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच नजदीकिया आ जाती है एक देश का विकास दूसरे देश के विकास से जुड़ जाता है प्राचीन काल से भारत विश्व के सुदूर भागों मेंव्यापार करता रहा है प्राचीन काल से मसालों और इस्पात का निर्यात हो रहा है रोम के भारत से संबंध थे वास्कोडिगामा 1948 में कालीकट पहुंचा था उसकी इस यात्रा से पुर्तगाल को इतना लाभ हुआ कि अन्य यूरोपीय भी भारत से व्यापार करने को आतुर हो गए
भूमंडलीकरण कोई नया विचार नहीं है लगभग 2000 ई पूर्व से 1000 ई तक पारस्परिक क्रिया लंबी दूरी तक व्यापार सिल्क रूट के माध्यम से हुआ सिल्क रूट मध्य और दक्षिण पश्चिमी एशिया में लगभग 600 किलोमीटर तक फैला हुआ था चीन को भारत पश्चिम एशिया और भूमंडली क्षेत्र से जोड़ता है सिल्क रूट के साथ वस्तुओं लोगों और विचारों चीन भारत और यूरोप के बीच हजारों किलोमीटर की यात्रा की और 1000 से 1500 ईसवी तक मध्य एशिया में लंबी–लंबी यात्राओं द्वारा वैचारिक आदान–प्रदान होता रहा इसी दौरान हिंद महासागर में समुद्री व्यवस्था को महत्व मिला कहना नितांत आवश्यक हो जाता है कि भूमंडलीकरण कोई नई अवधारणा नहीं है यह भूमंडलीकरण भारत तथा अन्य देशों के बीच परस्पर शिक्षा संस्कृति व्यापार आदि के माध्यम से कई वर्षों पूर्व से होता चला आ रहा है आज भारत दुनिया में 18 सबसे बड़ा निर्यातक देश बन चुका है परंतु अब के भूमंडलीकरण में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है अब एक देश अमेरिका ही संपूर्ण देश पर अपना विस्तार स्थापित कर रहा है
यह बार–बार याद दिलाया जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है जैसे–जैसे समाज में राजनीतिक बदलाव और आर्थिक समस्याएं परंपरागत रूढ़ियों का दोहन होता है यह साहित्य में भी अपना असर डालता है रूढ़ियों के दोहन का परिणाम है कि आज स्त्री अपने अधिकारों के लिए खुलकर सामने आ रही है और इस तरह साहित्य की गोद में अनेक विमर्श उत्पन्न हो रहे हैं जैसे स्त्री विमर्श दलित विमर्श वृद्धा विमर्श आदि कहीं न कहीं इन सब पर भूमंडलीकरण का ही प्रभाव दिखता है जहां एक और संपूर्ण भूमंडएकीकरण की बात हो रही है वही हम समाज में एकाकी परिवारों की संख्या को भी बढ़ता देख रहे हैं जिसकी वजह से वृद्धों के लिए वृद्ध आश्रम बनाए जा रहे हैं यह कैसा एकीकरण हो रहा है विश्व को तो एक करता है परंतु परिवारों को अनेक कर देता है अपने स्त्रीत्व को तलाश थी स्त्री आज आत्मनिर्भर बनने के लिए जब प्रयास करती है तब उसकी आवाज को दबा दिया जाता है समाज के ठेकेदारों ने गरीब लोगों को जमकर शोषण किया है इस शोषण का शिकार सबसे ज्यादा स्त्री बनती है ऐसा ही उदय प्रकाश की कहानी मैंगोसील में दिखाई पड़ता है दरोगा के कहने पर बिल्डर शोभा के घर उसे अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए जाता है रमाकांत (शोभा का पहला पति) शोभा के लिए दलाल ढूंढता है जिससे उसे कुछ पैसे मिल जाएं और उसे शराब मिल जाए पुलिस के दरोगा की नजर शोभा पर पड़ जाती है जिसके बाद शोभा की जिंदगी नरक से भी भयावह बन गई स्त्री के शोषण इतनी भयावह कथा बहुत ही कम दिखाई पड़ती है शोभा के साथ हुआ दुर्व्यवहार उपभोक्तावादी संस्कृति का चरम रूप है जहां स्त्री भी एक भोग की वस्तु रह गई है उपभोक्तावादी संस्कृति का एक भयावह रूप अखिलेश की कहानी यक्षगान में भी देखने को मिलता है सरोज कहानी की नायिका है सरोज जिस दिन पैदा हुई थी विष्णु दत्त पांडे ने चार बीघे खेत का मुकदमा जीता था उसी के हफ्ते भर बाद उनकी पुरानी गठिया की बीमारी में भी फायदा होना शुरू हुआ था और जब साल भर के भीतर ही गाय ने बछड़ा जना तब उनको लगा था कि सरोज बेटी भाग्योदय बनकर आई है उसी सरोज को गांव के ही लड़के छैल बिहारी से प्रेम हो जाता है और सरोज उसके साथ भाग जाती है और अर्धसामंती पूंजीवादी समाज में जिस प्रकार मजदूर किसान शोषक शक्तियों के झांसे में आकर उन्हीं को अपना उद्धार करता मान लेते हैं उसी प्रकार से सरोज छैल

बिहारी को अपना मुक्तिदाता मान का प्रेम कर बैठी एक ◆ दिन छैल बिहारी अपनी नौकरी के चलते अध्यक्ष को सरोज से मनमानी करने देता है लाचार सरोज जब उसके सामने गिड़गिड़ाती है तो उसका पति छैल बिहारी कहता है 'तुमने तो देखी थी ना नौटंकी द्रौपदी के पांच पति थे कि नहीं .....फिर तुम्हारे तो चार ही होंगे दूसरे जब राजा दशरथ की तीन रानियां थी तो तुम्हारे चार पति क्यों नहीं हो सकते यही समझ लो कि अध्यक्ष जी तुम्हारे सबसे बड़े पति है भूमंडलीकरण जहाँ एक और एक देश से दूसरे देश की संस्कृति को अपनाने पर बल देता है वही इस कहानी में छैल बिहारी अपने देश की परंपराओं को तांक पर रखता नजर आता है तू अनायास ताव खा रही है छैल बिहारी ने उसे शांत करने का एक और प्रयत्न किया क्या कुंती ने सूर्य से संबंध बनाया था ? .... हां अहिल्या को नहीं इंदर ने हासिल किया था? .... फिर सबसे बड़ी बात तुम्हारा तो पति तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा दे रहा है .... भूमंडलीकरण के कारण समाज का दोहन हुआ है और होता ही जा रहा है युवा पीढ़ी पर उपभोक्तावादी समाज और बाजारवाद का विशेष प्रभाव पड़ा है भूमंडलीकरण के द्वारा नैतिकता और मर्यादा टूट रही है डॉ अमरकांत भूमंडलीकरण के विषय में कहते हैं अपराधों में बुद्धि मनोरंजन के व्यापार में शो तो बिजनेस के साथ–साथ मुक्त योनाचार उद्धाम संगीत और अश्लील साहित्य का हमारे यहां भी उद्योग बन चुका है दूर दराज के उन क्षेत्रों में जहाँ लोगों को साफ पेयजल की सड़कें मौलिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं है टीवी की पहुंच के कारण लोग काल्पनिक दुनिया व यथार्थ में फर्क करना भूल चुके हैं जहां सिर्फ स्वार्थ लाभ और भ्रष्टाचार का घिनौना रूप दिखाई देता है जिस समाज में पति ही पत्नी के लिए दलाल ढूंढ रहा हो उस समाज की संस्कृति किस ओर जा रही है ? भूमंडलीकरण ने सिर्फ हमारी संस्कृति पर प्रभाव नहीं डाला है अपितु हमारी भाषा जीवन पद्धति खानपान पर भी बुरा असर डालना शुरू करखानपान पर भी बुरा असर डालना शुरू कर दिया है भूमंडलीकरण के कारण पूंजीपतियों का वर्चस्व और मजदूरों की दयनीय स्थिति का एक रूप हम जयनंदन के कहानी पानी बिच मीन पियासी में देखने को मिलता है आर्थिक उदारवाद के नीति के फलस्वरुप पूंजीपति की मनमानी के प्रति आक्रोश व मजदूरों की छटनी के लिए विरोध का चित्रण किया गया है। भूमंडलीकरण का स्वागत करने वाला उदारीकरण किसानों तथा ग्रामीण समाज पर सीधा एव बुरा असर डालता है अंतरराष्ट्रीय बाजार में सम्मिलित किए जाने के कारण किसानो और ग्रामीण जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ा है कृषि के भूमंडलीकरण का एक अन्य तथा अधिक प्रचलित पक्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियों का इस क्षेत्र में कृषि उत्पादों जैसे बीज कीटनाशक खाद के विक्रेता के रूप में प्रवेश हुआ खेती का ना होना तथा कुछ मामलों में उचित आधार अथवा बाजार मूल्यों के अभाव के कारण किसान कर्ज का बोझ उठाने तथा अपने परिवारों को चलाने में असमर्थ हो जाते हैं किसानों की कुछ ऐसी समस्या का चित्रण करती है जयनंदन की कहानी छोटा किसान यह उदारीकरण की नीति का परिणाम है कि आज पुराने ढंग की खेती में कोई बरकत नहीं रह गई है किसान यदि खाद बीज पानी और कीटनाशकों के लिए महाजनों के कर्ज कर्ज लेते हैं तो उसे चुका नहीं पाते हैं और उन्हें अपनी जमीन बेचनी पड़ जाती है दादू महंतों ने तय कर लिया कि अब वे बेटों के पास शहर चले जाएंगे अपने बड़कू को उन्होंने बुलवा लिया पूरा गांव या जानकर संनन गया कि जिस आदमी को अपनी जमीन बेचने में भी खून सूखने लगता था आज वह अपनी पूरी घर जमीन बेचने का ऐलान कर रहा है

निष्कर्ष

भूमंडलीकरण के दौर में सभी अपने अपनी दुकानदारी दलाली में व्यस्त हैं मानवीय मूल्य नैतिकता तार–तार होती जा रही है मानव मूल्यों का स्थान बाजार मुल्यों ने ले लिया है संपूर्ण संसार एक संवेदनहीन वस्तु की तरह हो गया है जो बिकने और बेचने कसंवेदनहीन वस्तु की तरह हो गया है जो बिकने और बेचने को तत्पर प्रतीत हो रहा है मनुष्य अपनी पहचान खोता जा रहा है ऐसे में साहित्यकार अपने साहित्य में संवेदना और मूल्यों को जीवित रखने की कोशिश कर रहे हैं विश्व बाजारवाद ने जिन समस्याओं को जन्म दिया साहित्यकार उन समस्याओं के निष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है भूमंडलीकरण के दौर में साहित्यकार की सामाजिक जिम्मेदारियां और भी बढ़ जाती है हमें याद है कि आजादी की लड़ाई में हमारे कवियों ने अपनी अपनी कविता से क्रांतिकारी वीरों में चेतना भर दी उसी प्रकार आज भी साहित्यकार समय–समय पर भूमंडलीकरण के दुष्प्रभाव से चेताते रहेंगे युग का बदलाव चेतना के बदलाव का कारक बनता है और युगीन चेतना तथा उससे प्रभावित विचारधारा मानवीय जीवन के सभी क्षेत्रों व्यवहार और चिंतन को प्रभावित करती है

संदर्भ सूची

1. अपनी उनकी बात मैंगोशील उदय प्रकाश वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2013
2. तिरिछ उदय प्रकाश वाणी प्रकाशन संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या 49
3. समकालीन हिंदी कहानी बदलते जीवन शैलजा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2004
4. छप्पन तोले का करघन उदय प्रकाश पहल पत्रिका अंक 27 पृष्ठ संख्या 245
5. समकालीन हिंदी कहानी डॉ पुष्पा पाल सिंह पृष्ठ संख्या 23
6. मेरी प्रिय कहानियां असगर वजाहत राजपाल एंड संस पृष्ठ संख्या 124
7. वैश्वीकरण स्त्री विमर्श दलित चेतना डॉ मनीष शर्मा पृष्ठ संख्या 27 साहित्यकार प्रकाशन जयपुर
8. संपूर्ण कहानियां ज्ञानरंजन राजकमल प्रकाशन 2022
9. यक्षगान बायोडाटा अखिलेश
10. पानी बीच मीन प्यासी ,छोटा किसान कहानी संग्रह जयनंदन
11. भारत का भूमंडलीकरण अभय कुमार दुबे लोकवाणी 2006
12. भूमंडलीकरण और स्त्री कुमार भास्कर राजकमल प्रकाशन 2007
13. भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास पुष्पाल सिंह राजकमल प्रकाशन 2008
14. आधुनिक हिंदी कहानी नारी जीवन मूल्य कृष्ण कांत भारद्वाज अमन प्रकाशन 2009
15. प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य और संप्रदायिक समस्याएं ओमप्रकाश सिंह नमन प्रकाशन 1998
16. भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति वृंदा करात अनु ग्रंथ सिल्क शिल्प 2008
17. हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली डॉ अमरनाथ राजकमल प्रकाशन
18. उदारीकरण की तानाशाही प्रेम सिंह राजकमल प्रकाशन 2006
19. समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ पुष्पाल सिंह पृष्ठ संख्या 23